स्वागत

श्यामलाल एम.एस
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
एस.एच कॉलेज,तेवरा

ठाकुर का कुआँ (कहानी)

विद्रोही गंगी की चरित्रगत विशेषताएं

- मुंशी प्रेमचंद गंगी पात्र की जगह किसी पुरुष को भी रख सकते थे। लेकिन उन्होंने तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति और विशेषकर दलित महिलाओं के जीवन पर फोकस करते हुए गंगी के जरिये कहानी कही।

- आजादी की लड़ाई के क्त जब देश अंग्रेजों से लड़ रहा था, तब भारतीय समाज तमाम विकृतियों से भी दो-चार हो रहा था।

- दबी आवाज में ही सही, दलित समाज भी अपनी मुक्ति के लिए हाथ-पैर मार रहा था। ऐसे में एक दलित महिला को सामने रखकर प्रेमचंद ने विद्रोह की आग में झुलसती महिला को समाज के बदलते स्वरूप का द्योतक बना दिया है।

गंगी के मन में ऊंची जाति के लोगों के प्रति उठ रहे विद्रोह के बवंडर की बानगी देखिए- ‘यहां तो जितने हैं, एक से एक छंटे हैं।
चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे-मुकदमे ये करें।

अभी इस ठाकुर ने उस दिन बेचारे-गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मार कर खा गया।
इन्हीं पंडित जी के घर में तो बारह मास जुआ होता है।
यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। ये काम करा लेते हैं। मजदूरी देते समय नानी मरती है।

...कभी गांव में आ जाती हूं तो रसभरी आंखों से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर सांप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊंचे हैं।’

गंगी के कहे शब्दों से सहज ही अंदाजा हो जाता है कि तत्कालीन समाज में जाति के नाम पर कितने घेरे खींचे हुए थे।

कैसी विडम्बना है कि बीमार जोखू (गंगी का पति) बीमारी की हालत में भी बदबूदार पानी पीने को मजबूर है। पानी जैसा सहज पेय पदार्थ भी उसे आसानी से हासिल नहीं हो पाता। उसके लिए उस अभागे की पत्नी गंगी को भय और आतंक की भयानक स्थिति से गुजरना पड़ता है।

गंगी के जीवन चरित्र पर विचार करें तो वह एक जागरूक नारी के रूप में उभरती है। उसके चरित्र में स्वाभाविकता है, साफगोई है।

धन्यवाद